9

उषा राजे सक्सेना के कहानी संग्रह वॉकिंग पार्टनर में चित्रित स्त्री जीवन

शिखा एवं नीलम गर्ग***

उषा राजे सक्सेना का कहानी संग्रह 'वॉकिंग पार्टनर' आधुनिक स्त्री जीवन की जटिलताओं, संघर्षों और आत्मबोध की गहन पड़ताल करता है। लेखिका ने अत्यन्त संवेदनशीलता से स्त्री के भीतर के अकेलेपन, टूटन, आधुनिक समाज में स्त्री की स्थिति, अस्तित्व की खोज एवं आत्मसम्मान की उसकी लड़ाई को यथार्थ के साथ प्रस्तुत किया है। इन कहानियों में स्त्री केवल पीड़िता या सहानुभूति की पात्र नहीं है, बल्कि वह सजग, सोचने- समझने वाली एवं अपने अधिकारों के लिए मुखर व्यक्ति के रूप में उभरती है। 'वॉकिंग पार्टनर' शीर्षक कहानी सहित संग्रह की अन्य कहानियाँ भी स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की नाजुक परतों को उधेड़ती हैं। यहाँ की स्त्रियाँ अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने की इच्छा रखती हैं चाहे इसके लिए उसे सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक अपेक्षाओं से टकराना ही क्यों न पड़े। वे सिर्फ पीड़ित नहीं, बल्कि संघर्षशील एवं आत्मसम्मान से परिपूर्ण व्यक्ति के रूप में सामने आती हैं। इन कहानियों की भाषा सजीव, सरल एवं आत्मीय है, जिसमें यथार्थ की कसक के साथ-साथ उम्मीद की एक कोमल रोशनी भी मौजूद है।

[**प्रमुख शब्द :** अस्मिता, अस्तित्व, स्वतन्त्र व्यक्तित्व, नारी शोषण, आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, परम्परा, रूढ़ियाँ।]

आधुनिक समय प्रतियोगिता का समय है। हर मनुष्य अपने आपको जीवन की दौड़ में आगे पाना चाहता है। समय तेज गति से बदला है, लेकिन स्त्री के विषय में कोई सोच तेज गति से बदलने को तैयार नहीं है। सदियों से चली आ रही परम्पराओं में आज भी स्त्री के जीवन में पीड़ाएँ

* **शोध अध्येत्री, हिन्दी विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।**
** **प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, शम्भु दयाल स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।**

कम नहीं हैं। स्त्री जीवन का दूसरा नाम ही संघर्ष है। आज भी किसी-न-किसी रूप में स्त्री के जीवन में हस्तक्षेप हो रहे हैं, उसे आज भी दबाया जा रहा है। स्त्री को सदा से एक यन्त्र की भाँति प्रयोग किया जाता रहा है। उसे परिवार के लिए समर्पित करने के लिए दबाव डाले जाते हैं। उसकी स्वयं की महत्वाकांक्षाओं को दरकिनार कर उसके वजूद पर प्रश्न चिन्ह लगा दिए गए हैं। आज शोषण का रूप भी बदल दिया गया है। पहले शारिरिक शोषण स्त्री के जीवन का हिस्सा था। अब मानसिक शोषण भी स्त्री जीवन से जुड़ चुका है। कारण यह है कि आज की नारी अपने अधिकारों के बारे में सजग है और यही सजगता उसे किसी भी कीमत पर झुकने को तैयार नहीं है। पुरुष चाहे कितना भी आधुनिक हो जाए, परन्तु उसकी सोच आधुनिक नहीं हो सकती। स्त्री के प्रति उसके विचार नहीं बदलते। उसे हमेशा यह डर सताता है कि जिन्दगी की दौड़ में स्त्री उससे आगे ना निकल जाए। परन्तु इन सबके बावजूद स्त्री अपने जीवन में संघर्ष करते हुए अपने कर्तव्य का पालन बड़ी निष्ठा से करती है और समय आने पर अस्तित्व की रक्षा करना भी जानती है।

स्त्री जीवन की विभिन्न समस्याएँ एवं स्त्री का प्रखर रूप हमें उषा सक्सेना के कहानी संग्रह *'वॉकिंग पार्टनर'* में देखने को मिलता है। *वॉकिंग पार्टनर* की कहानियों में स्त्री के विभिन्न रूप से सम्बन्धित विभिन्न समस्याएं हमारे सामने आती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हम इस कहानी संग्रह में भी व्यक्त स्त्री जीवन को निम्न बिन्दुओं के आधार पर विवेचित कर सकते हैं—

1. स्वतन्त्र प्रवृत्ति एवं निज अस्मिता

उषा राजे सक्सेना के कहानी संग्रह *वॉकिंग पार्टनर* में चित्रित कहानी क्लिक में तान्या दीवान एक स्वतन्त्र प्रवृत्ति की लड़की है। प्रस्तुत उदाहरण उसके आधुनिकता रूप का बेबाकी से प्रस्तुतीकरण करता है—''लंदन के खुले और उन्मुक्त वातावरण में तान्या दीवान का व्यक्तित्व खिल उठा। वह जल्दी ही महानगरी के सारे दुरूह रास्ते पहचान गई। व्यवहार-कुशल तो ऐसी की क्या कोई कूटनीतिज्ञ होगा। पढ़ाई-लिखाई उसने जमकर किया। मम्मी-डैडी को कभी कुछ कहने का मौका नहीं दिया। ऑनर्स के साथ डिग्री, मास्टर्स, पी-एच0 डी0 और फिर जब नौकरी मिली तो सांची और सांची में। धन-दौलत शोहरत सब तानिया के कदम तले। सेमिनार, कॉन्फ्रेंस, क्लबिंग, हॉली-डे, इंटरव्यूज महिला मित्रों के साथ-साथ ढेरों पुरुष मित्र। व्यवसाय के साथ-साथ हर तरह के व्यक्तिगत अनुभव। नौकरी और गाड़ी और गाड़ी के बदलते मॉडल के साथ मित्रों के दायरे और घेरे भी बदलते। तान्या ने अपने जीवन को मन मुताबिक संवारा।''[1] यहाँ तक कि वह शादी-विवाह को एक बन्धन मानती है। ''शादी करो तो उसकी सुनो फिर बच्चे पैदा करो, मुझे बच्चे-कच्चे तो बिल्कुल नहीं चाहिए। यह मुसीबत और तकलीफ मुझे नहीं झेली जाएगी। मुझे अपनी स्वतन्त्रता बहुत प्रिय है।''[2]

लेखिका ने तान्या दीवान के रूप में एक ऐसी आधुनिक स्त्री की चर्चा की है जो समय अनुसार बदल रही है। स्वतन्त्रता स्त्री का अधिकार है। उसे भी अपने मन मुताबिक जीवन जीने का अधिकार है। वह किसी बन्धन में करने को तैयार नहीं है। तान्या के रूप में लेखिका ने यही दर्शाया है।

स्वतन्त्र जीवन की चाह रखने वाली स्त्री *'वॉकिंग पार्टनर'* की एक अन्य कहानी 'मेरे अपने' में दिखाई पड़ती है। प्रस्तुत कहानी की स्त्री पात्र 'एला' एक स्वतन्त्र दृष्टिकोण रखती है और अपने आत्मविश्वास के दम पर अपने भविष्य का चुनाव करती है वह अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व के लिए पिता के घर का त्याग कर देती है—"अपने बाप के शक्तिशाली व्यक्तित्व के नियन्त्रण से छुटकारा पाने के लिए रोष में एडिनबरा स्थित उसके विशाल घर तथा सुख सुविधाओं को पल भर में छोड़कर भागी थी।"[3] पिता द्वारा पत्र लिखकर मिलने के लिए बुलाने पर वह मिलने आती है पर स्पष्ट कर देती है—"मैं तुमसे नाराज जो थी, तुम्हारे तानाशाही में मेरा दम घुट रहा था।"[4] पिता द्वारा वापिस आ जाने की बात पर भी वह सहमत नहीं होती और अपने जीवन के महत्त्वपूर्ण निर्णय को उन्हें सुना देती है कि वह मिर्चा से विवाह कर सैटिल होना चाहती है।

वॉकिंग पार्टनर कहानी में चित्रित रिफत का व्यक्तित्व भी स्वतन्त्र प्रवृत्ति का है। शादी को अपने जीवन का बन्धन मानने वाली रिफत अपनी जिन्दगी को पूरी मौज मस्ती से व्यतीत करना चाहती है। 'शादी की कमिटमेंट' गले की फाँसी है, कौन करे अपनी बर्बादी।'[5] रिफत शादी को जीवन तबाह करने वाली चीज बताती है। स्वतन्त्र विचारों वाली रिफत लिव-इन में रहती है तथा अपने ऊपर किसी का नियन्त्रण स्वीकार नहीं करती। जब तक जिन्दगी हँसी-खुशी चली ठीक, वरना रास्ते अलग। प्रस्तुत कहानी में स्वतन्त्र सोच की मालिक रिफत आधुनिक महिला का किरदार निभाती दिखाई देती है।

प्रस्तुत संग्रह की 'वजूद' कहानी में बैजन्ती अपने अस्तित्व को पहचान कर अपने जीवन को सिर्फ दूसरों के लिए ना जी कर अपने वजूद को भी रेखांकित करती है। बैजन्ती अपने पति की गलती को चाह कर भी भूल नहीं पा रही। वह संकल्प लेती है कि उसने जीवन भर अपने परिवार का ध्यान रखा है। पर वह सिसकियों में अपना जीवन नहीं बर्बाद करेगी। वह नहीं तड़पेगी उस गुनाह के लिए जो उसके पति ने किया है। बैजन्ती ने सोच लिया कि उसे अब जीवन से अपने लिए कुछ चाहिए। अपने शेष जीवन को अब वह अपनी निज अस्मिता को कायम करने में लगायेगी। "इंजन की तेजी से 'वैकेंसी कलम' पर लाल निशान लगाते हुए पास पैड पर टेलीफोन नंबर और पता नोट किया......कल सुबह जिन्दगी एक नया मोड़ लगी और मेरे अनुभव के बंद दरवाजे खुलेंगे.....।"[6] परिवार के कार्यों से बाहर निकलकर वह अपने जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखेगी। लेखिका ने बैजन्ती के माध्यम से स्पष्ट किया है कि स्त्री जब अपने वजूद को पहचानती है तो उसके अनुभव एक नया मोड़ लेते हैं और वह जीवन में आगे बढ़कर सब कुछ हासिल कर लेती है।

2. रूढ़ियों को तोड़ती हुए स्त्री

रूढ़ियों, परम्पराओं, मानसिक आघात सबको स्त्री के जीवन पर लादा जाता है। किन्तु उषा राजा जी के कहानी संग्रह *वॉकिंग पार्टनर* में चित्रित कहानी 'रुखसाना' में अब इन चीजों की कोई जरूरत रुखसाना को नहीं है। वह पारम्परिक रूढ़ियों को तोड़कर अपने स्वयं के अनुभव एवं आत्मविश्वास के दम पर अपने भविष्य का चुनाव करती है। "रुखसाना उन तमाम बदनसीब लड़कियों में से है, जिनके माँ-बाप उनके बालिग होने से पहले ही उनके मुल्क ले जाकर उनकी

शादी जबरदस्ती अपने अनपढ़-गंवार जाहिल रिश्तेदारों से कर देते हैं।''[7] वास्तव में लड़कियों की मर्जी या पसन्द उनसे कोई नहीं पूछता, वह सिर्फ अपने परिवार के अन्दर घुटकर रहती है तथा ना चाहते हुए भी अपने माँ-बाप की पसन्द के अनुसार अपना सारा जीवन एक ऐसे पुरुष के साथ बिताने को मजबूर हैं, जो उनके लायक ही नहीं है। स्त्री का जीवन उसके परिवार वाले निश्चित करते हैं, उसे अपनी सम्पत्ति समझ कर उस पर हक जाहिर करते हैं। विवाह जैसे बड़े निर्णय में भी उनकी कोई सहमति नहीं होती। ''मीरपुर से आए इमीग्रांट्स के लिए लड़कियाँ सिर्फ जनानियाँ होती हैं। वे दुनिया में सिर्फ अपने मर्दों की खिदमत और औलाद पैदा करने के लिए होती हैं। उन्हें दुनिया के किसी और मरहले से कोई मतलब नहीं होना चाहिए।''[8] वास्तव में ऐसी विचारधाराएँ परिवारों में ही पनपती हैं। ऐसी विचारधाराएँ और ऐसी संस्कृति स्त्री के लिए अनेक समस्याओं को जन्म देती है। रुखसाना ऐसे परिवारों में जन्मी लड़की है जिनके लिए महिलाएँ केवल बच्चा पैदा करने का यन्त्र है। उसे अन्य किसी काम से कोई मतलब नहीं होना चाहिए। परन्तु रुखसाना अपने इल्म की बुनियाद के लिए अपनी शिक्षिका जय से प्रार्थना करती है—''मैं अपनी पढ़ाई जारी रखना चाहती हूँ आपसे मदद की गुजारिश करती हूँ आप इल्म की देवी हैं।''[9] और बेड़ियों को तोड़कर वह इस प्रकार दुखाना ने सिसकियों को तोड़ दिया तथा अन्धेरों में जीना छोड़कर अपने लिए नए मार्ग तलाशना शुरू कर दिया।

3. नारी का शोषित रूप

वॉकिंग पार्टनर में कहीं-कहीं शोषित स्त्री के चित्रण भी दृष्टगोचर होते हैं। वह पुरुषों द्वारा कहीं शारीरिक व कहीं मानसिक पीड़ा सहने को बाध्य हुई है। परन्तु इन सबके बावजूद उसने हार नहीं मानी और जीवन में दुख का दंश झेलते हुए अपनी राह पर निडर रूप से चली। उसे अब किसी की जरूरत भी नहीं है। वह मानसिक व्यथा से बाहर निकल अपने जीवन को सकारात्मक तरीके से जीना चाहती है।

स्त्री का यही रूप हमें प्रस्तुत संग्रह की कहानी 'दर्द का रिश्ता' में देखने को मिलता है। मंजरी बाल रूप में शारीरिक शोषण का शिकार होती है जब उसके चाचा का लड़का उसको ठगता है अर्थात उसकी अस्मिता को बुरी तरह झकझोर देता है। अपने पिता की मृत्यु से दुखी मंजरी का फायदा उसका चचेरा भाई अपने दोस्त के साथ मिलकर उठाता है—''रोती, बदहवास वय-संधि पर खड़ी अबोध बालिका को दुलारने-पुचकारने के बहाने सहलाते-दबाते, भर अंकवार चीड़-फाड़ फाड़ उसकी अस्मिता को ही जीम जाते। उसे अपनी स्थिति तब समझ आई जब वह उसको चाट-चबाकर डकार ले चुके थे।''[10] हमारे समाज में स्त्री का शारीरिक शोषण परिवार में भी होता है। लेखिका ने मंजरी के रूप में अत्यन्त सूक्ष्मता से इसको उजागर किया है। स्थिति इतनी खराब है कि स्त्री की मर्यादा की रक्षा कोई नहीं करता सिर्फ भूखे शेर की तरह सब उसे पैर टूटने को तैयार हैं। शोषण होने पर भी उसका दर्द कोई नहीं समझता वरन प्रस्तुत कहानी में मंजरी की मां भी उसकी पिटाई करती है। ''मुंह में कपड़ा ठूस, हरामखोर, हरामजादी, करमजली, नासपीटी, मुंहजली कहते हुए जो उसकी पिटाई का आज भी पसलियों में दर्द करकता है।''[11] वास्तव में स्त्री ही स्त्री को समझ नहीं पाती। अपनी बेटी के बारे में सुनकर यह

सब जानकर उसकी माँ उसकी ही पिटाई कर देती है। वह उसे ही जिम्मेदार ठहरती है। परिस्थिति भी विपरीत हो जाती हैं। लेखिका ने परिवार वालों के इस दोगलेपन को बहुत सूक्ष्मता से चित्रित किया है। शाहीन एक ऐसी स्त्री है जो बचपन में तो सौतेली माँ द्वारा प्रताड़ित होती है और बाद में शौहर द्वारा घर से निकाल दी जाती है—''सही बात तो ये है कि शाहीन बेहद अकेली है उसका मिर्चआ शुरू से मनचला रहा है उसने गोरी पाल रखी है और वह दूसरे मकान में रहता है। शाहीन कुड़ती है। 'मेंटली रिटायर्ड लड़के के साथ काउंसिल स्टेट में अकेली रहती है। जिन्दगी में इंग्लैंड आने के सिवा उसने कोई सुख नहीं देखा है। शादी से पहले सौतेली माँ ने उसकी जान हलकान कर रखी थी अब मियां सीने पर मूंग दल रहा है।''[12] प्रस्तुत कहानी स्त्री के प्रयास और जीवन जीने की जिजीविषा को स्पष्ट उजागर करती है।

4. संघर्षरत नारी

उषा जी की कहानियों में स्त्री की जो छवि हमें दिखाई देती है, वह एक संघर्ष करती हुई स्त्री की है। संघर्ष जीवन को निखारता है, उसमें और अच्छा करने की शक्ति देता है। समस्याओं से घबराना उषा जी की कहानियों में स्त्री पात्र ने नहीं सीखा। वह निरन्तर नए रंग जीवन में भरकर एक नई ऊर्जा के साथ समस्याओं का स्वागत करती दिखाई देती हैं। ऐसी ही संघर्षशील स्त्री का प्रतिनिधित्व *'वॉकिंग पार्टनर'* कहानी की दो लड़कियाँ करती हैं। लेखिका जी ने जिस तरह इनका चरित्र गढ़ा है वह अत्यन्त प्रशंसा की पात्र हैं। यह लड़कियाँ जीवन में कुछ करने की चाह रखती है मगर परिस्थिति इन्हें मजबूर कर देती है कि वह इस तरह का अशोभनीय कार्य करें जो अपनी अस्मिता को भी नष्ट कर दें। अपने पिता को जीवन बचाने के लिए यह लड़कियाँ अपने अस्मिता का सौदा करके रकम जुटाती हैं। परिवार के लिए मनुष्य को जीवन में कई बार ऐसे काम करने पड़ते हैं जो शर्मनाक होते हैं परन्तु हम प्यार के लिए सब कुछ कुर्बान कर देते हैं, वह चाहे परिवार का प्यार हो, चाहे पिता का चाहे पति का। ''दुनिया में कुछ भी अच्छा या बुरा नहीं है, बस इंसान की सोच उसे अच्छा या बुरा बनाती है।''[13] स्त्री को अपने वजूद के लिए संघर्ष करना पड़ता है। यह संघर्ष कभी इतना दर्दनाक हो जाता है कि उन्हें बुरी औरत के खिताब से भी नवाजा जाता है तथा वक्त आने पर जीवन में कठिन से कठिन त्याग करने पड़ते हैं। प्रस्तुत कहानी इस सत्य को पूर्णता उद्घाटित करती है।

5. दृढ़ प्रतिज्ञ एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण स्त्री

उषा राजे सक्सेना के कहानी संग्रह *वाकिंग पार्टनर* में स्त्री का दृढ़ संकल्प एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण रूप भी सामने आता है। नारी में विश्वास की एक लहर होती है। वह अपने दृढ़ संकल्प के जरिए बड़े-बड़े कार्य को आसानी से कर देती है। ऐसी ही एक स्त्री पात्र इस संग्रह की कहानी डायरी के पन्नों से..... 'द रिफ्यूज कलेक्टर' में चित्रित हुई है। इसका नाम रोजमैरी है। रोजमैरी बीमा बिस्माट को उसके जीवन में घटित घटना से बाहर निकालने की प्रतिज्ञा करती है। ''मैंने मन ही मन निर्णय लिया है कि मैं इस बालक को एक केस हिस्ट्री की तरह स्टडी नहीं करूँगी। बस आठ वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते हम उसे कॉन्फिडेंट एवं आत्म-सम्मान से युक्त एक साधारण बालक बना देंगे''[14] और रोज मैरी का प्रभावशाली

व्यक्तित्व उस बालक को समाज में सम्मान दिलाने में सहायता करता है। लेखिका ने उजागर किया है कि स्त्री का रूप ही ऐसा होता है कि वह प्रेम व त्याग की मिट्टी से ऊपजी होती है। हृदय में अनगिनत भावनाएँ तथा मस्तिष्क से कठोर निर्णय लेने वाली नारी समाज के लिए भी कारागार साबित होती है। स्त्री का यही रूप लेखिका जी ने महत्वाकांक्षी मयंक कहानी में भी उभारा है। प्रस्तुत कहानी की अंजलि अपने पति की नौकरी जाने के बाद गर्भवती होते हुए भी नहीं घबराती तथा दृढ़ प्रतिज्ञ एवं आत्मविश्वास द्वारा अपने पति को संभालती है। ''कोई काम अच्छा या बुरा नहीं होता है मयंक''[15] अपने पति से कहने वाली अंजलि में गजब का आत्मविश्वास है। खुले विचारों वाली अंजलि की नजर में मनुष्य के लिए कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता। बस मेहनत के बल पर आगे बढ़ना चाहिए और जमाने की परवाह नहीं करनी चाहिए कि लोग क्या कहेंगे। अंजलि अन्धेरे में उजाले का रास्ता मयंक को दिखाती हुई उसके साथ सहयोग पूर्ण व्यवहार करती है। दृढ़ प्रतिज्ञा स्त्री का एक और रूप हमें प्रस्तुत संग्रह की कहानी 'दर्द का रिश्ता' में देखने को मिलता है। स्त्री पुरुषों के सम्बन्धों पर आधारित इस कहानी में मंजरी अपने पति की जान बचाने के लिए दूसरी सावित्री बनने को तैयार है। अपने पति की बीमारी में उसका मनोबल बढ़ाकर उसे जीवन में आशा की किरण दिखाती है। मिहिर एच0आई0वी0 जैसी खतरनाक बीमारी से ग्रस्त है तथा मृत्यु ही उसका अन्तिम सत्य है। परन्तु मंजरी आत्मविश्वास से पूर्ण उसकी जीवन शैली निर्धारित कर अगले 25 वर्षों तक साधारण जीवन जीने में उसकी सहायता करती है। दृढ़ प्रतिज्ञा कर उसके लिए अपना जीवन सर्वस्व निछावर करने को तैयार है। ''मंजरी मिहिर का मनोबल टूटने नहीं देना चाहती।''[17] मंजरी एक ऐसी सशक्त नारी के रूप में सामने आती है जिसे अपने पति की लाइलाज बीमारी से कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे सकारात्मक जीवन शैली जीने में तन-मन से उसका पूर्ण सहयोग करती है। ''मंजरी ने योजना बना ली कार्यशैली निर्धारित कर ली फिर अर्जुन के धनुषसंधान से प्रेरणा ले, अपनी आँखें मिहिर के स्वास्थ्य पर केन्द्रित की''[17] पूर्ण सहयोगिनी के रूप में मंजरी का चरित्र उभर कर सामने आता है। अपने जीवन में सुख की लालसा न रख केवल अपने पति की जीवन शक्ति बढ़ाने का हर सम्भव प्रयास मंजरी को उज्ज्वल चरित्र ही प्रदान करता है। विषम परिस्थिति में भी तनिक विचलित नहीं होती और सशक्त किरदार के रूप में सामने आती है।

6. संस्कृति व भाषा के प्रति निष्ठा

प्रस्तुत कहानी संग्रह में संग्रहित कहानी महत्वाकांक्षी मयंक विभिन्न पारिवारिक मूल्यों को दिखाती नजर आती है। परिवार में बढ़ते मित्रों का आना-जाना अंजलि को सही नहीं लगता। घर का वातावरण और परिवेश तरह-तरह के मेहमानों और व्यापारी मित्रों के आने जाने से ऐसे अवांछित रूप से बदल रहा था कि पारिवारिक मूल्य और रीति रिवाज विकृत हो उठे। मयंक बड़ा व्यापारी बन चुका है, परिवार में तमाम तरह के लोगों का आना-जाना लगा रहता है। जीवन में पारिवारिक मूल्य बदलते जा रहे हैं। वातावरण अशुद्ध हो चुका है। अंजलि भविष्य में अपने परिवार को लेकर चिन्तित है। वह अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति भी आशंकित रहती है कि बदलते परिवेश में किस तरह अपनी भाषा संस्कृति को सुरक्षित रख पाएगी। अंजलि विदेश में पली बढ़ी है किन्तु भारतीय मूल्यों की कदर करती है। ''लंदन में पली बढ़ी अंजलि खुले विचारों की थी पर बा

से मिले संस्कारों के कारण कई मायनों में वह भारतीय मूल्यों को ही अधिक पसंद करती थी।''[18] अंजलि खुले विचारों की महिला है, परन्तु फिर भी भारतीय संस्कृति के प्रति उसकी आस्था है। उसकी परवरिश ऐसे संस्कारों से हुई है जो आधुनिक होने के साथ-साथ आध्यात्मिक भी हो। अपने पति के धन के प्रति बढ़ते मोह से भी अंजलि चिन्तित है। अपनी बेटी को लेकर उसके मन में तमाम उलझने हैं। प्रस्तुत उदाहरण में उसकी चिन्ता स्पष्ट होती है— ''डैनिययाला अच्छी नैनी है, अनन्या को उस फ्रेंच संस्कार मिल रहे हैं। पर क्या उसमें अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति कोई एहसास है।''[19] प्रस्तुत संग्रह की कहानी 'द रिफ्यूज कलेक्टर' की स्त्री पात्र रोजमैरी भी समाज के बीच खोई सांस्कृतिक पहचान दिलाने में प्रयास करती नजर आई है। रोज मैरी का व्यक्तित्व बड़ा प्रबल होकर सामने आता है। उदाहरण दृष्टव्य है—''मेरी अपनी सांस्कृतिक पहचान और मूल्य जो इस समाज के दबदबे में खो गए थे। आज पूरे जोर-शोर से उभर कर सामने आए''[20] रोजमैरी समाज की गतिविधियों में हिस्सा लेती और अपनी सांस्कृतिक पहचान व मूल्यों को स्पष्ट करने में बयां करती है। अपनी संस्कृति अपनी पहचान होती है। इन्सान चाहे कहीं भी रहे किन्तु उसे अपनी सभ्यता तथा संस्कृति को नहीं भूलना चाहिए। अपनी संस्कृति और सभ्यता पर बोलना और उसका विस्तार करना मुझे सदा अच्छा लगता था। रोजमैरी उषा जी की कहानी में इस तरह उभर कर आती है जो अपनी कार्यशैली में समय निकालकर अपने देश की सभ्यता व संस्कृति पर कुछ कार्य करने को तत्पर है। *वॉकिंग पार्टनर* की एक अन्य कहानी 'मजहब' हमें दोहरी संस्कृति और धर्म के विचित्र रूप का अनुभव कराती है। जूही जेब को जो उसकी शिष्य है उसे मजहब के द्वन्द्व से बाहर निकलने में उसकी सहायता करती है। ''क्या फर्क पड़ता है मेरे हिंदू या मुसलमान होने से मैं तुम्हारी टीचर हूं तुम्हारी बेहतरी चाहती हूँ''[21] जूही के स्वभाव में निष्पक्षता है। वह खुले विचारों की महिला है उसे धर्म जात में कोई विश्वास नहीं है। जूही ऐसे पात्र के रूप में सामने आती है जो किशोरावस्था की ओर उन्मुख जेबा को मानसिक असन्तुलन की स्थिति से बाहर निकलने में सफल होती है। भोली भाली जेबा नस्ली और मजहबी बातों का अर्थ और सन्दर्भ ना समझते हुए भी उसके भंवर में फंसती जा रही थी। जेबा का व्यवहार अचानक बदलता जा रहा था। उसकी दादी उसे मजहब, धर्म संस्कृति की शिक्षा अपने तरीके से देने लगी थी। जिससे जेबा का मन विचलित हो उठा। जूही ऐसे नारी का पात्र निभाती है जो स्वयं खुले विचारों की महिला है और बच्चों में सिर्फ अपने कार्य के प्रति ईमानदार होने की शिक्षा देती है। उषा राजे की कहानी में स्त्री पात्र विदेश में रहते हुए भी भाषा व संस्कृति के प्रति अपना दायित्व निभाते हैं। इस तरह हम देखते हैं कि उषा जी की इन दोनों कहानियों में एक ओर दो भाषा और संस्कृति के प्रति निष्ठा दिखाई गई है, वही मजहब के द्वन्द्व में फसी स्त्री का भी बखूबी चित्रण है।

7. निष्कर्ष

इस तरह उषा राजे सक्सेना के कहानी संग्रह **वॉकिंग पार्टनर** में तमाम तरह की स्त्रियों के जो रूप देखने को मिलते हैं उनमें उनका आत्मविश्वास प्रबल सीमा पर है। स्त्रियाँ आज कमजोर नहीं है। उषा जी की कहानियों की प्रमुख पात्र स्त्री रही है। इस संग्रह में चित्रित कहानियों में स्त्री की छवि चेतनशील और विषम परिस्थितियों में हार ना मानने वाली के रूप में उभरती है। लेखिका ने स्पष्ट किया है कि अब स्त्रियों ने पारम्परिक रूढ़ियों व बन्धनों को तोड़ दिया है।

यद्यपि उषा जी की कहानियों में नारी का शोषित रूप भी सामने आता है परन्तु वह समस्या से भी लड़कर अपने रास्ते चुन लेती है। संघर्ष की स्थिति भी इन कहानियों के स्त्रियों में दिखाई गई है। *वॉकिंग पार्टनर* में जरीना करीना लड़कियाँ अपने पिता की जान बचाने हेतु अपनी अस्मिता तक को न्योछावर कर देती हैं विदेश में रहते हुए भी अपनी सांस्कृतिक पहचान और भाषा के प्रति निष्ठा भी स्त्री का उज्ज्वल रूप का चित्रण करती है। मजहब के द्वन्द्व में ना फँसकर जीवन में सिर्फ कर्म को ही महत्त्व देने वाली नारी जूही है।

स्त्री को अपने सही गलत का मार्ग स्वयं ही खोजना होगा। सिसकियाँ को तोड़कर, सहारों से मुँह मोड़ कर अपने जीवन शैली का निर्माण स्वयं ही करना होगा। जब अनुभव के बन्द दरवाजे खुलते हैं तो जीवन की दिशा एक नया मोड़ लेती है। प्रस्तुत संग्रह की कहानी में यही सत्य उजागर होता है।

सन्दर्भ-सूची

1. उषा राजे सक्सेना, **वार्किंग पार्टनर**, जी–17, जगतपुरी नयी दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2004, पृ0सं0 24.
2. वही, पृ0सं0 34.
3. वही, पृ0सं0 37.
4. वही, पृ0सं0 50.
5. वही, पृ0सं0 23.
6. वही, पृ0सं0 16.
7. वही, पृ0सं0 16.
8. वही, पृ0सं0 17.
9. वही, पृ0सं0 82.
10. वही, पृ0सं0 82.
11. वही, पृ0सं0 46.
12. वही, पृ0सं0 52.
13. वही, पृ0सं0 69.
14. वही, पृ0सं0 58.
15. वही, पृ0सं0 86.
16. वही, पृ0सं0 86.
17. वही, पृ0सं0 56.
18. वही, पृ0सं0 63.
19. वही, पृ0सं0 67.
20. वही, पृ0सं0 108.

★

https://doi.org/10.62047/JNDH.2025.10.31.77